1947 के भारत-विभाजन का ऐतिहासिक

एवम् राजनीतिक अध्ययन

MICROFILMED
ROLL No. 75

इतिहास विषय में

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

की

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

मार्गदर्शक

डॉ. बी. एस. अग्रवाल

प्राध्यापक

महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य
महाविद्यालय, ग्वालियर

सह मार्गदर्शक

डॉ. ए. एस. राजपूत

प्राध्यापक

महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर

शोध कर्त्ता

दिवाकर नाथ चतुर्वेदी

प्राचार्य

महाराजा मानसिंह महाविद्यालय
ग्वालियर

1993

::: प्रमाण - पत्र :::

हम, डॉ. बी.एस. अग्रवाल एवं डॉ. ए.एस. राजपूत, यह प्रमाणित करते हैं कि -

(1) श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी का "1947 के भारत विभाजन का ऐतिहासिक एवं राजनीतिक अध्ययन" शीर्षक से प्रस्तुत यह शोध-प्रबन्ध हमारे मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है, और यह उनका मौलिक प्रयास है ।

(2) श्री दिवाकर नाथ चतुर्वेदी ने हमारे मार्गदर्शन में जीवाजी विश्वविद्यालय के अध्यादेश क्र. 11-8(अ) में उल्लेखित अवधि में शोध-केन्द्र पर उपस्थित रहकर यह शोध कार्य पूर्ण किया है ।

(3) यह शोध-प्रबन्ध पी-एच.डी. उपाधि से सम्बन्धित [illegible] विश्वविद्यालय के अध्यादेश की शर्तों को पूर्ण करता है ।

(4) विषय-वस्तु, सामग्री, भाषा, प्रस्तुतिकरण एवं विश्लेषण आदि की दृष्टि से यह शोध-प्रबन्ध पी-एच.डी. उपाधि के स्तर का है, जो कि परीक्षकों को प्रेषित करने योग्य है ।

सह-मार्गदर्शक,
26/4/93
(डॉ. ए.एस. राजपूत)
प्राध्यापक - इतिहास विभाग,
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय,
ग्वालियर

मार्गदर्शक,
(डॉ. बी.एस. अग्रवाल)
प्राध्यापक - राजनीति विज्ञान विभाग,
महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य (स्वशासी) महाविद्यालय,
ग्वालियर

दिनांक :

अग्रेषित,
26/4/93

::: **घोषणा - पत्र** :::

मैं, **दिवाकर नाथ चतुर्वेदी**, घोषणा करता हूं कि **"1947 के भारत-विभाजन का ऐतिहासिक एवं राजनीतिक अध्ययन"** विषय पर प्रस्तुत यह शोध-प्रबन्ध मेरा स्वयं का मौलिक प्रयास है । इसे मैंने जीवाजी विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय के अन्तर्गत इतिहास विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है तथा **डॉ. बी.एस.अग्रवाल** एवं **डॉ.ए.एस. राजपूत** के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है ।

जहां तक मेरी जानकारी है, उपरोक्त शीर्षक पर, एवं अपनाये गये
एवं विदेशी को किसी भी शोध उपाधि हेतु
उपागम के आधार पर, किसी भी भारतीय, विश्वविद्यालय में शोध प्रबन्ध प्रस्तुत नहीं किया गया है ।

शोधकर्ता,

(दिवाकर नाथ चतुर्वेदी)

दिनांक : 26.4.93

26/4/93

- आभार प्रदर्शन -

सर्वप्रथम मैं विद्या की देवी सरस्वती मां को नमन करता हूं जिन्होंने अपनी असीम अनुकम्पा से मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु मुझे मानसिक रूप से तैयार करने में मदद दी । मैं अपने माता पिता स्वर्गीय **श्री दुर्गाप्रसाद चतुर्वेदी एवं श्रीमती रामदेई चतुर्वेदी** को भी नमन करता हूं जो मुझे बचपन में 1947 के भारत विभाजन की गाथायें सुनाया करते थे, तभी से मुझे 1947 के भारत विभाजन पर कुछ लिखने की लालसा उत्पन्न हुई थी जिसे प्रोत्साहित एवं पल्लवित करने का कार्य किया, मेरे परम मित्र **डॉ. बी.एस. अग्रवाल** ने जो कि मेरे शोध प्रबन्ध के मुख्य मार्गदर्शक भी बने । अतः **डॉ. अग्रवाल** को मैं हृदय से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूं जिनके मार्गदर्शन में यह शोध प्रबन्ध लिखा गया और जिन्होंने एक सच्चे विद्वान की भांति मेरा मार्गदर्शन किया व समय समय पर मुझे अमूल्य सुझाव भी दिये ।

इसी प्रकार **डॉ. अर्जुन सिंह राजपूत**, जो कि इस शोध प्रबन्ध के सहमार्गदर्शक हैं, उनका भी हृदय से आभारी हूं जिन्होंने भी अपने गहन और विस्तृत ज्ञान से मेरा मार्गदर्शन किया ।

अब मेरा कर्तव्य है कि जिन महानुभावों व संस्थाओं से मुझे सहायता प्राप्त हुई है, उनके प्रति भी आभार व्यक्त करूं । मैं महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. जी.पी. शर्मा**, एवं पुस्तकालयाध्यक्ष का भी आभार मानता हूं । जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के ग्रन्थालयाध्यक्ष एवं **श्रीमती ऊषा गुप्ता**, पुस्तकालयाध्यक्ष, महाराजा मानसिंह महाविद्यालय, ग्वालियर नेशनल लायब्रेरी कलकत्ता, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय लायब्रेरी दिल्ली आदि का भी कृतज्ञ हूं क्योंकि उनके सहयोग एवं सहायता के बिना यह शोध प्रबन्ध पूर्ण होना असम्भव था ।

इस शोध कार्य को पूर्ण करवाने का श्रेय मेरे भ्राताओं **सर्वश्री कृष्णानन्द, रघुवर दयाल, सतीशचन्द्र, दयानन्द, हेमचन्द्र** व **भरतचन्द्र** को भी जाता है, जिन्होंने अपनी अपनी कुशाग्र बुद्धि से मुझे उस समय की दुर्लभ जानकारियां उपलब्ध करवाने में मेरी मदद एवं आर्थिक सहायता भी दी। अतएव मैं उनका सदैव ऋणी रहूंगा ।

मैं महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं जिसने शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान की ।

श्री नृसिंह जोशी, बलराम सिंह जैसवानी, उपेन्द्रनाथ (एडवोकेट आगरा), डॉ. सुरेश प्रसाद चतुर्वेदी (लखनऊ), **गोविन्ददास,** अवकाश प्राप्त पुलिस आयुक्त (हैदराबाद), **बृजकिशोर सेवानिवृत्त,** डी.आई.जी., पूना, **छक्कन लाल जी (दिल्ली),** अवकाश प्राप्त कर्नल **कमलसिंह चौहान** आदि ने भी तत्कालीन समय की महत्वपूर्ण जानकारियां दीं । इसलिये मैं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं ।

आभारी हूं **डॉ. रामनाथ मिश्रा, डॉ. एस.डी. शर्मा, डॉ. श्रीमती विजया सिन्हा,** जीवाजी विश्वविद्यालय अध्ययनशाला तथा **डॉ. एस.एन. खन्ना, डॉ.वर्मा,** आदि का जिन्होंने शोध सम्बन्ध में आने वाली समस्याओं को हल करने में अपना योगदान दिया ।

इसी प्रकार मेरे सहयोगी प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों ने भी महाविद्यालय में मेरी व्यस्तता को कम कर मुझे इस शोध कार्य को पूर्ण करवाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया, इसके लिये मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं ।

मैं अपनी सहधर्मिणी **श्रीमती गीता चतुर्वेदी** को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, जिनके पूर्ण सहयोग से ही यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सका ।

शोध-प्रबन्ध के स्वच्छ व सुन्दर टंकण कार्य के लिये मैं **श्री अश्विनी कुमार सूद** का भी आभारी हूं ।

अन्त में उन सभी मित्रों व सम्बन्धियों का भी, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दिया, मैं आभार मानता हूं ।

(दिवाकर नाथ चतुर्वेदी)

स्थान : पीली कोठी परिसर,
तानसेन रोड, लोको,
ग्वालियर.
दिनांक: 16-4-93

- प्राक्कथन -

क्रोस के कथनानुसार समस्त इतिहास समकालीन इतिहास है । हम भूतकाल को परिवर्तित तो कर नहीं सकते, पर प्रत्येक नई पीढ़ी बीते हुए काल पर नये प्रश्न पूछती है और उसकी अपनी समझ के अनुसार व्याख्या करती है । इसलिये इतिहास की यह एक विडम्बनापूर्ण स्थिति है कि यह सदा अपूर्ण रहता है । कोई भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना निरन्तर विवाद का विषय रहती है ।

1947 के भारत विभाजन की घटना भी इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विषय है, जिसका शोध एवं विवेचन अभी तक जारी है और अपूर्ण है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का भी उद्देश्य भारतीय इतिहास की इस दुःखद घटना को कुछ नये प्रश्नों एवं आयामों के अन्तर्गत देखना तथा इस प्रश्न पर विचार करना है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के काल में एक से एक महान राजनीतिज्ञ दिग्गजों के होते हुए भी ब्रिटिश शासक अपनी "फूट डालो और राज्य करो" कूटनीति में कैसे सफल हो गये और वे क्यों साम्प्रदायिकता पर आधारित अलगाववादी शक्तियों का सामना न कर सके ?

तत्कालीन सामाजिक ऐतिहासिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में इस प्रश्न की तथ्यात्मक खोज करते हुए, नवीन दृष्टिकोणों एवं विश्लेषणों के प्रकाश में उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर देने का ही यह एक ऐसा प्रयास है, जिसमें उस घटना से सम्बन्धित कुछ प्रचलित धारणाओं का भी मूल्यांकन सम्मिलित है और इस सम्बन्ध में कुछ प्रचलित भ्रान्तियों एवं मतभेदों का निराकरण करने का भी प्रयत्न किया गया है ।

*****

- विषयानुक्रमणिका -

पृष्ठ क्रमांक

अध्याय - प्रथम	:	**ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -**	...	1 - 24
	-	1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम		
	-	1857 के पश्चात् से ब्रिटिश शासन का भय		
अध्याय - द्वितीय	:	**अंग्रेजी शासन की नीति -**	...	25 - 34
	-	सैनिक		
	-	प्रशासनिक		
	-	राजनीतिक		
	-	धार्मिक		
अध्याय - तृतीय	:	**मुस्लिम साम्प्रदायिकता -**	...	35 - 70
	-	वैचारिक एवं ऐतिहासिक आधार		
	-	धार्मिक आधार		
	-	मुस्लिम साम्प्रदायिकता के राजनीतिक व सामाजिक लक्ष्य		
अध्याय - चतुर्थ	:	**हिन्दू साम्प्रदायिकता -**	...	71 - 83
	-	वैचारिक एवं ऐतिहासिक आधार		
	-	धार्मिक आधार		
	-	राजनैतिक एवं सामाजिक लक्ष्य		
अध्याय - पंचम	:	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीति -**	...	84 - 118
	-	बंगाल का विभाजन एवं उसका विरोध		
	-	साम्प्रदायिक आधार पर चुनाव का विरोध		

पृष्ठ क्रमांक

- खिलाफत आन्दोलन
- मुस्लिम लीग व उसकी मांगों के प्रति नीति
- भारत विभाजन की स्वीकृति

अध्याय - षष्ट : **अन्य सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की भूमिका -** ... 119 - 164

- आर्य समाज
- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ
- हिन्दू महासभा
- अकाली
- देवबन्द एवं जामिया मिलिया इस्लामिया
- ऐंग्लो इण्डियन एवं ईसाई संगठन

अध्याय - सप्तम् : **तात्कालिक कारण -** ... 165 - 241

- मुस्लिम लीग द्वारा सीधी कार्यवाही
- द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव
- वेवल योजना
- लार्ड माउन्टवेटन की भूमिका
- कांग्रेस के तत्कालीन प्रमुख नेता (महात्मा गांधी, नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद)

अध्याय - अष्टम : **विभाजन रोकने के प्रयासों की असफलता -** ... 242 - 262

- प्रमुख प्रयास
- असफलता के कारण
- परिणाम
- मूल्यांकन

अध्याय - नवम् : **उपसंहार** ... 263 - 270

सन्दर्भ, ग्रन्थ सूची ... *I - IX*

*****